आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2014-2016

मासिक पत्रिका

अजायब ❁ बानी

वर्ष : चौदहवां | अंक : चौथा | अगस्त-2016

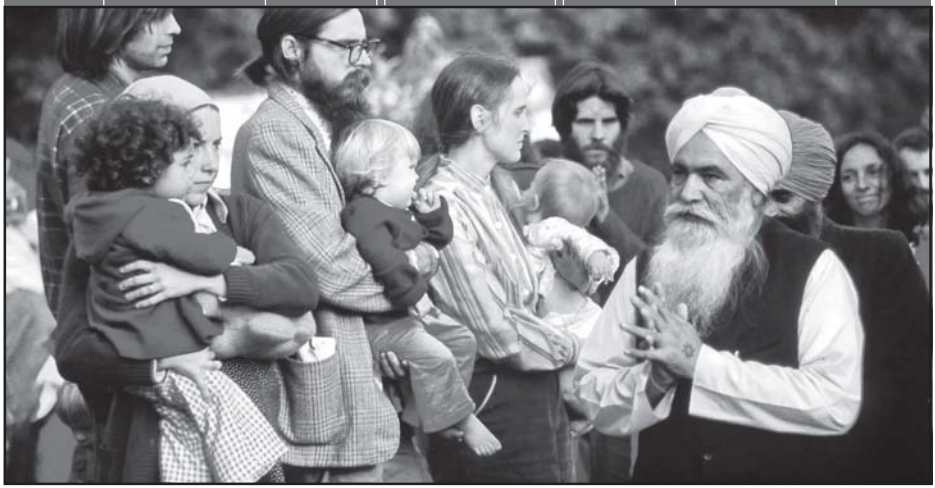

मुक्ति का सबको बराबर हक है *(सतसंग)* 5

मरने से पहले मरें *(महाराज कृपाल सिंह जी के मुखारविन्द से)* 17

सतसंग की महानता *(महाराज सावन सिंह जी के मुखारविन्द से)* 31

संपादक–प्रेम प्रकाश छाबड़ा
99 50 55 66 71(राजस्थान)
98 71 50 19 99 (दिल्ली)
उप संपादक–नन्दनी

विशेष सलाहकार–गुरमेल सिंह नौरिया
99 28 92 53 04
96 67 23 33 04

सहयोग– ज्योति सरदाना,
सुमन आनन्द व परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स, नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website :www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 अगस्त 2016 –173 मूल्य – पाँच रुपये

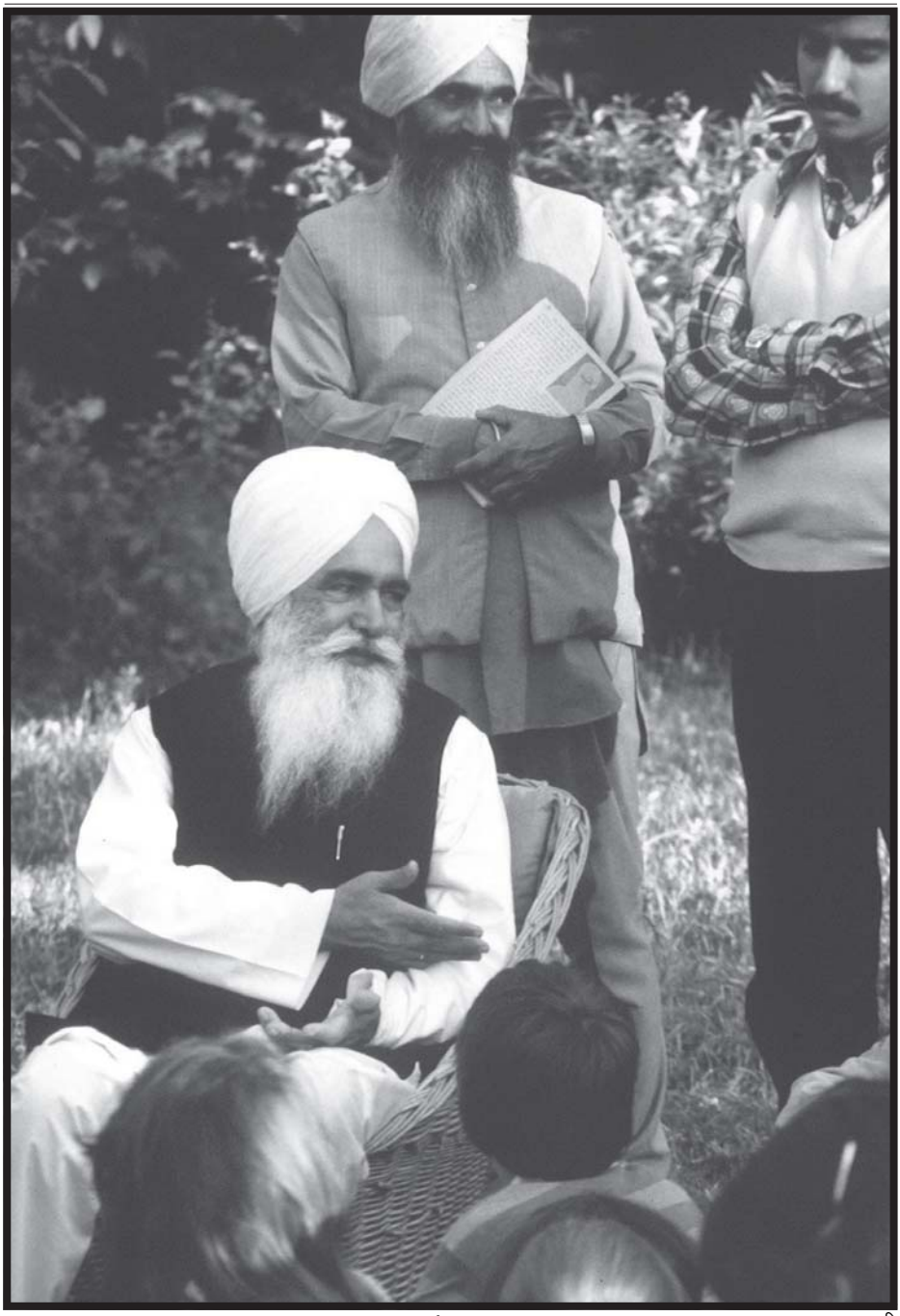

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

मुक्ति का सबको बराबर हक है

हुजूर स्वामी जी महाराज की बानी DVD 576 कोलंबिया

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमें भक्ति का दान दिया, भक्ति करने का मौका दिया और इस गरीब आत्मा पर रहम किया। मैं हमेशा ही बताया करता हूँ कि सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे, मालिक के हुक्म में आते हैं और उसके हुक्म का प्रचार करते हैं। परमात्मा, महात्मा को संसार में आत्मा की सेवा के लिए भेजता है, जब परमात्मा बुला लेता है तो महात्मा इस संसार से चले जाते हैं।

महात्मा समाज बनाने के लिए नहीं आते और न पहले की बनी समाज तोड़ने के लिए आते हैं। महात्मा हमसे परमात्मा की भक्ति करवाकर परमात्मा से मिलवाने के लिए आते हैं। महात्मा जब तक संसार में रहते हैं उनकी शिक्षा पर पूरा-पूरा अमल होता है। हर मुल्क, हर समाज की आत्मा उनके चरणों में बैठकर फायदा उठाती है लेकिन जब ऐसे महात्मा संसार से चले जाते हैं तो वहाँ पेट प्रचारक पैदा हो जाते हैं।

महात्मा की शिक्षा सारे संसार के लिए होती है लेकिन हम उनकी शिक्षा को मजहब की रंगत दे देते हैं, एक-दूसरे के साथ लड़ते-झगड़ते हैं। आप मजहबों की तंगदिली से ऊपर उठकर देखें! किसी महात्मा की बानी पढ़कर देखें! सब महात्मा यही कहते हैं, ''परमात्मा एक है। ऐसा नहीं कि अमेरिका वालो का परमात्मा और है, कोलंबिया वालो का परमात्मा और है, यूरोप वालो का परमात्मा और है या हिन्दुस्तान में रहने वालों का कोई और परमात्मा है।''

गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा है, ''हम सबकी एक जैसी आँखें हैं और एक जैसी बोलने की शक्ति है। दुनियावी तौर पर हमारी भाषा में फर्क होता है लेकिन जन्म और मृत्यु एक ही तरीके से होती है।'' सभी महात्माओं ने यही कहा है कि संसार के हर बच्चे को माता के पेट में रहना पड़ता है। उसे माता के दूध और परवरिश की जरूरत होती है चाहे बच्चा किसी भी मुल्क या समाज में क्यों न पैदा हुआ हो।

सन्त कहते हैं कि सबको पैदा करने वाला परमात्मा है। परमात्मा सबके अंदर इस तरह समाया हुआ है जैसे फूल के अंदर खुशबू, पत्थर के अंदर अग्नि, मेहंदी के पत्तों के अंदर रंग, तिल के अंदर तेल और दूध के अंदर घी है। हम जब तक युक्ति से दूध को बिलो नहीं लेते तब तक दूध के अंदर घी नहीं देख सकते। जो युक्ति जानता है वह पहले दूध को गरम करता है, जामन लगाता है फिर उसे बिलोता है तब मक्खन निकलता है और मक्खन को गरम करने से घी निकलता है; घी उसी दूध में है।

इसी तरह परमात्मा हमारे शरीर के अंदर है लेकिन हमें पता नहीं कि हमने इस शरीर में कान, नाक या आँख के रास्ते दाखिल होना है। अगर हमने किसी घर के अंदर दाखिल होना हो और हमें उस घर के दरवाजे का पता न हो तो हम किस तरह उस घर के अंदर दाखिल होंगे?

जिस तरह विद्या स्टूडेंट के दिमाग के अंदर है। टीचर की विद्या जागी होती है। जब स्टूडेंट टीचर का हुक्म मानता है तो टीचर स्टूडेंट के अंदर विद्या जगा देता है। जो स्टूडेंट टीचर के पास नहीं जाता विद्या तो उसके दिमाग में भी है लेकिन वह अनपढ़ रह जाता है। इसी तरह हम स्कूल से विद्या प्राप्त करके डॉक्टर बन सकते हैं,

इंजीनियर बन सकते हैं। हम जो कुछ भी बनना चाहते हैं उसकी ट्रेनिंग लेनी पड़ती है उसका कोर्स करना पड़ता है। आप किसी भी इंजीनियर, साईंसदान, डॉक्टर से जाकर पूछें क्या आपके उस्तादों ने कुछ रगड़कर या घोलकर आपके अंदर डाला था? वे हमें यही बताएंगे कि हमने उस्तादों की सोहबत की तभी हम अपने मकसद में कामयाब हुए। आज जो अच्छे-अच्छे ओहदो पर हैं वे अच्छी जिंदगी व्यतीत कर रहे हैं क्योंकि उन्होंने स्कूलों में जाकर अच्छी मेहनत की और वे उसका अच्छा फल भोग रहे हैं।

जब बच्चा स्कूल जाता है तब टीचर उसके आगे एम.ए. तक की सारी किताबें नहीं रख देता कि एम.ए पास करने तक सोलह साल लगते हैं। अगर टीचर उसके आगे सारी किताबे रख दे तो बच्चा घबरा जाएगा उसके दिमाग पर बोझ पड़ेगा। इसलिए टीचर ए से शुरू करता है बच्चे को पता ही नहीं लगता, धीरे-धीरे बच्चा तरक्की करता जाता है बड़ा होता जाता है। टीचर उस बच्चे पर अपनी लियाकत जाहिर करते जाते हैं। परमपिता परमात्मा प्रकाश है, नूर है। जो महात्मा अंदर जाते हैं उनकी बानी से पता लगता है:

नाम जपत कोट सूर उजियारा बिनसे भरम अँधेरा।

हम यहाँ एक सूरज की तरफ भी नहीं देख सकते। परमात्मा के एक रोम का मुकाबला करोड़ो सूरज भी नहीं कर सकते तो हम किस तरह वहाँ आँखें टिका सकते हैं, किस तरह उसे बर्दाश्त कर सकते हैं? जिस तरह मैंने बताया है कि टीचर ए से शुरू करके बच्चे को एम.ए पास करवा देते हैं।

इसी तरह सन्त-महात्मा भी सबसे पहले हमारे अंदर सतसंग के जरिए परमात्मा से मिलने का शौक, विरह, तड़फ पैदा करते हैं।

सतसंग के जरिए महात्मा हमें बताते हैं कि प्यारेयो! परमात्मा प्योर और पवित्र है। हमारी आत्मा भी प्योर और पवित्र थी लेकिन मन का साथ लेने की वजह से यह गंदी और मैली हो चुकी है।

अगर किसी सज्जन, किसी मेहमान या किसी और अफसर ने हमारे घर आना हो तो हम घर की सफाई करते हैं कि वह हमारे घर की निन्दा न करे कहीं नाराज न हो जाए! हम दुनिया के रिश्तेदारों से तो इतना डरते हैं लेकिन जो परमात्मा इतना ऊँचा, सुच्चा और सच्चखण्ड का रहने वाला है उसने हम सबको जीवन दिया है क्या हमने कभी उस तरफ सफाई के लिए ध्यान दिया?

सच्चे से सच्चा मंदिर, गुरुद्वारा या चर्च हमारा शरीर है। हम परमात्मा के रहने के लिए धर्म-स्थान बनाते हैं उस जगह कोई बुरे-खोटे कर्म नहीं करते। उस जगह की सफाई करते हैं, धूप अगरबत्ती इत्यादि जलाते हैं लेकिन परमात्मा ने जो मंदिर बनाया है जिसमें वह खुद बैठा है क्या हमने कभी इस मंदिर की सफाई की तरफ ध्यान दिया?

जो लोग यह प्रचार करते हैं कि पशु-पक्षी इंसान के खाने के लिए बनाए हैं वे हमें गुमराह करते हैं। प्यारेयो! ये सब कुछ परमात्मा ने कायनात का श्रृंगार बनाया हुआ है। परमात्मा की बनाई हुई धरती पर एक इंसान को जीने का जितना हक है उतना ही हक पशु-पक्षियों को भी है। परमात्मा ने ही सबको पैदा किया है और सबमें परमात्मा ही बैठा है।

जो आज पशु-पक्षी बने हुए है हो सकता है पहले ये अच्छे सेठ-साहूकार हों। इन्होंने इंसानी जामे में आकर जो-जो पाप किए, गल्तियाँ की उसकी सजा भुगतने के लिए परमात्मा ने इन्हें निचले जामों में भेज दिया।

सन्त हमें प्यार से कहते हैं प्यारे बच्चो! आप दूसरों के दुख को अपने दुख जैसा समझें। अगर गलती से जानवर का कत्ल करते हुए कसाई के हाथ पर छुरा लग जाए तो वह कितना रोता-चिल्लाता है और अपने दुख को कितना बड़ा ब्यान करता है। जान तो सबमें एक है। जब कोई मुर्गा, सूअर या किसी भी जानवर का कत्ल करता है तो वह जानवर कितना रोते-चिल्लाते हैं क्या कभी किसी ने उनका रोना-चिल्लाना सुना है? कबीर साहब कहते हैं, ''सबको एक जैसा दर्द होता है, जान सबको प्यारी है।''

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जिसको हम देखते हैं उसके साथ प्यार नहीं करते उसकी जान लेने के लिए तैयार हो जाते हैं। हम रब से प्यार करने का दावा करते हैं। जिसको देखा नहीं उसके साथ कैसे प्यार कर सकते हैं, कैसे उसकी भक्ति कर सकते हैं?''

जो लोग परमात्मा को अपने अंदर प्रकट कर लेते हैं उनका हर एक के साथ प्यार होता है। चाहे किसी भी मुल्क का हो, पशु-पक्षी हो वे हर एक के अंदर परमात्मा को समझते हैं। जब हम रोज-रोज महात्मा का सतसंग सुनते हैं उनकी सोहबत करते हैं तब हमारे अंदर जो पाप, ऐब और घटिया दर्जे के ख्याल होते हैं हम उन्हें धीरे-धीरे छोड़ना शुरू कर देते हैं।

आखिर हम महात्मा के कहे मुताबिक अपनी अच्छी जिंदगी गुजारने लग जाते हैं अच्छे इंसान बन जाते हैं। महात्मा हमारे अंदर नाम का दीपक जला देते हैं, नाम की चिंगारी पैदा कर देते हैं। महात्मा हमें समझाते हैं, ''प्यारे बच्चों! आप रोज-रोज अभ्यास करें। परमात्मा की दरगाह सच्चखण्ड से जो आवाज पैदा हो रही है आप उसे भी रोज-रोज सुनें। हम जिस चीज़ का रोज-रोज अभ्यास करेंगे हमें उसमें महारथ पैदा हो जाएगी।''

संसार की सारी धर्म-पुस्तकें इस बात की गवाही भरती हैं कि सन्तों की बाहर की देह देखकर ऐसा न समझें कि यह हमारे जैसा इंसान है। प्यारे मित्रों! सन्त कुछ और भी पोजीशन रखते हैं। एक अनपढ़ है वह भी इंसान की शक्ल रखता है और एक इंजीनियर है वह भी इंसान की शक्ल रखता है लेकिन उनकी क्वालिफिकेशन में कितना फर्क होता है।

हमारी आत्मा के ऊपर स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीन पर्दे हैं। जब हम स्थूल दुनिया में हैं तब सन्त-महात्मा स्थूल जामें में आकर सतसंग के जरिए अंदर जाने का शौक पैदा करते हैं और परमात्मा से मिलने के फायदे बताते हैं। जब हम अभ्यास के जरिए स्थूल पर्दा उतारकर सूक्ष्म में चले जाते हैं तब हमारा प्यारा सतगुरु सूक्ष्म रूप धारण कर लेता है, जब हम कारण पर्दा उतार लेते हैं तब वह शब्द रूप होकर दर्शन देता है। जैसे-जैसे हम अंदर तरक्की करते जाते हैं उसी तरह सतगुरु अंदर अपनी पोजिशन बदलता जाता है। जब हम सच्चखण्ड पहुँच जाते हैं वहाँ पता लगता है कि जिस महात्मा को हम एक मामूली इंसान समझते थे उसमें और परमात्मा में कोई भिन्न-भेद नहीं है।

राम कबीरा एक भए हैं कोई न सके पछानी।

सांसारिक तौर पर ऐसे महात्मा बहुत छोटा सा जीवन व्यतीत करते हैं। उनके अंदर जितनी नम्रता होती है उतनी दुनियादारों में नहीं होती। ऐसे महात्मा किसी समाज या सभा-सोसायटी पर बोझ बनकर नहीं आते बल्कि वे दस नाखूनों से मेहनत करके अपना पेट पालते हैं और अपने सेवको को भी यही उपदेश देते है कि प्यारेयो! आप अंदर जाकर परमात्मा से तभी मिल सकते हैं जब आप पवित्र तरीके से रोजी-रोटी कमाते हैं।

जो महात्मा आपसे कोई फीस न माँगे आपका समाज न छुड़वाए आपकी बोली आपका मुल्क़ न बदलवाए और मुफ्त में आपकी मजदूरी करे अगर आप उससे फायदा न उठाएं, उसे बुरा-भला कहें तो सोचकर देखें! आप कितनी गलती कर रहे होते हैं?

नाम की महिमा अपरम्पार, जावां सतगुरु के बलिहार, (2)
पलक झपकते कट जाते हैं, उसके कष्ट कलेश,
जिसके मन मंदिर में रहते, सतगुरु जी हमेश,
और नाम से बड़ा नहीं है, कोई भी आधार,
नाम की महिमा .....

नाम जपा कबीर नानक ने, जग में किया उजाला,
लेकर प्रभु का नाम पी गई, मीरा जहर प्याला, (2)
नित नियम से करो नाम से, जीवन का श्रृंगार,
नाम की महिमा .....

प्रभु से बेमुख रहा जो कोई, उसने जन्म गंवाया,
उसका जीवन सफल हो गया, जिसने नाम ध्याया, (2)
जो भी चढ़ा नाम की नईया, उतर गया भव पार,
नाम की महिमा .....

नाम की महिमा नाम ही जाने, यां जिस नाम ध्याया,
'अजायब' कृपाल के चरनी लग के, कोटि–कोटि यश गाया,(2)
जो भी द्वारे आया गुर के, उसका बेड़ा पार,
नाम की महिमा .....

आपके आगे स्वामी जी महाराज का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है गौर से सुनें। स्वामी जी महाराज हमें चेतावनी देते हैं कि प्यारेयो! यह दुनिया एक मंच है और एक्टर मंच पर आकर अपना-

अपना पार्ट अदा करते हैं । जब एक्टर मंच पर आकर अपना पार्ट करते हैं तो वे आरजी रिश्ते बना लेते हैं कोई राजा बनता है कोई रानी बनती है कोई कुछ तो कोई कुछ और बन जाता है। उनमें एक मस्करी करने वाला दुष्ट भी बन जाता है; जब वे अपना-अपना पार्ट अदा करके मंच से नीचे आ जाते हैं तो उनमें न कोई राजा होता है न रानी होती है और न ही कोई मस्करी करने वाला दुष्ट होता है। हम देखने वाले उनके पार्ट की प्रशंसा करते हैं कि उसने बहुत अच्छा पार्ट किया और हम कईयों के पार्ट को पसंद नहीं करते ।

इसी तरह जब हम संसार की स्टेज पर आते हैं तो हम यहाँ आकर आरजी रिश्ते बना लेते हैं कोई माता, कोई पिता तो कोई बहन-भाई बनकर आ जाता है। हम अपना-अपना पार्ट अदा करते हैं न माता को पता है कि मेरा बेटा कहाँ से आया है? न पत्नी को पता है कि मेरा पति कहाँ से आया है ? न पति को पता है कि मेरी पत्नी कहाँ से आयी है? जब हम अपना आखिरी पार्ट अदा करते हैं न पत्नी पति को बताकर जाती है कि मैं कहाँ जा रही हूँ, न पति पत्नी को बताता है, न बेटा बाप को बता सकता है कि मैं कहाँ जा रहा हूँ ? इसी तरह हमने दुनिया में आरजी रिश्ते बनाए होते हैं। पिछले रिश्ते याद नहीं तो आज वाले कहाँ याद रहेंगे!

सन्त हमें चेतावनी देने के लिए आते हैं कि देखो प्यारेयो! आप यहाँ आरजी तौर पर आए हैं आपका घर सचखण्ड है, आपकी आत्मा सतपुरूष की अंश है। आपने एक दिन यह घर और यह शरीर भी छोड़ जाना है। दयालु परमात्मा जिस पर मेहर करता है जिसे अपने साथ मिलाना चाहता है सबसे पहले उसे इंसानी जामे में लाता है फिर जिस पर और मेहर करता है कि अब इसे चौरासी के दुख-सुख नहीं भोगने देने उसे किसी महात्मा की शरण में

लेकर आता है। जब महात्मा हमारे ऊपर दया-मेहर करते हैं तो वे हमें अंदर जाने का साधन और तरीका बताते हैं; हमें सच्चे शब्द-नाम के साथ जोड़ देते हैं। गुरु नानक साहब कहते हैंः

इकनी लाहा ले चल्ले इक चल्ले मूल गँवाए जिओ।

एक इंसानी जामें में आकर परमात्मा की भक्ति करके परमात्मा के साथ मिल जाते हैं। दूसरे इंसानी जामें में बैठकर न खुद शांत है न अपने पड़ोसियों को शान्ति से रहने देते हैं, वे इंसानी जामें को गँवाकर चले जाते हैं।

देखो सब जग जात बहा। देखो सब जग जात बहा।।
देख देख मैं गति या जग की। बार बार यों वर्ण कहा।।

स्वामी जी महाराज प्यार से कहते हैं, ''इंसान का जामा बहुत कीमती है यह मूल्य से नहीं मिलता लेकिन हम इस जामें को कौड़ियों के भाव और विषय-विकारों में गँवा रहे हैं।'' इसलिए परमात्मा अपने प्यारे बच्चे सन्त-महात्माओं को बार-बार कभी किसी समाज में कभी किसी मुल्क़ में भेजता है। महात्मा हमें चेतावनी देते हैं, ''प्यारे बच्चो! आप होश करें अगर इंसान के जामे में बैठकर परमात्मा की भक्ति करके आप परमात्मा से नहीं मिले पता नहीं! ऐसी जगह जाकर जन्म हो जाए कि हम भूले-भटके भी परमात्मा से न मिल सकें।''

महाभारत में एक कहानी आती है कि यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा, ''दुनिया में सबसे विचित्र बात कौन-सी है?'' यक्ष ने कहा, ''हम आँखों से दुनिया को मरते हुए देखते हैं, संसार को छोड़ते हुए देखते हैं। इंसान को खाली हाथ जाते हुए भी देखते हैं और उन्हें उठाकर श्मशान भूमि में भी पहुँचाकर आते हैं लेकिन खुद

इस बात को स्वीकार नहीं करते कि एक दिन हमारे साथ भी ऐसा होगा। सोचते हैं शायद! मौत लोगों के लिए है हमारे लिए तो ऐशों-इशरतें, शराब-कबाब ही हैं।'' कबीर साहब कहते हैंः

यह तन कागज की पुड़िया बूँद पड़त गल जाओगे।
कहत कबीर सुनो भई साधो ईक नाम बिना पछताओगे।।

सन्त कहते हैं, ''मौत एक नंगा सच है जिसे हम मानने के लिए तैयार नहीं। आमतौर पर जब किसी की मौत होती है तो हम यही कहते हैं कि डॉक्टर टाईम पर नहीं आया या डॉक्टर ने गलत दवाई दे दी या ऑक्सीजन का सिलेंडर देर से पहुँचा या इसे हार्ट अटैक हो गया।'' गुरु नानक साहब कहते हैंः

जिसकी चीज सोई ले जाए, भूला रोवन हारा हे।

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''प्यारे बच्चों! जिस परमात्मा ने संसार में भेजा है जिसने जीवन दिया है वही इसे ले गया है। आप भूले हैं जो इसके मोह में रोते हैं। डॉक्टर के पास बीमारी की दवाई है बीमारी का ईलाज कर सकता है लेकिन मौत का ईलाज किसी डॉक्टर के पास नहीं है।'' कबीर साहब कहते हैं :

वैद्य कहे हौं ही भला दारू मेरे वस, ऐह ते वस्त गोपाल की जब भावे ले खस।

सन्त हमें चेतावनी देते हैं कि श्वांस बहुत कीमती है, आप इस जीवन में बैठकर परमात्मा की भक्ति करके परमात्मा से मिलें।

चारों जुग चौरासी भोगी। अति दुख पाया नर्क रहा।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि हम सतयुग, द्वापर, त्रेता और कलयुग में भी आए। हम कभी पशु, कभी पक्षी, कभी जानवर बने कभी पहाड़ो के जामे में आए तो कभी पेड़ो के जामें में आए। जहाँ भी जाकर जन्म लिया वहाँ दुख ही दुख, मुसीबतें ही मुसीबतें हैं। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

नानक दुखिया सब संसार, सो सुखिया जिस नाम आधार।

कबीर साहब कहते हैं:

कोई तो तन मन दुखी कोई नित उदास।
एक एक दुख सबन को सुखी सन्त का दास।।

जन्म जन्म दुख पावत बीते। एक छिन कहीं न चैन लहा।
पाप पुन्य बस बिपता भोगी। नहिं सतगुरु का चरन गहा।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''मुक्ति नाम में है, नाम सतगुरु से मिलता है अगर हम नेक कर्म करते हैं तो सेठ-साहूकार बनकर आ जाते हैं, हुकूमत की बागडोर मिल जाती है हाथ से झाड़ू निकल जाता है, झोपड़ी से बिस्तर उठाकर महल में लगा लेते हैं।''

अब यह देह मिली किरपा से। करो भक्ति जो कर्म दहा।।
अब की चूक माफ नहिं होगी। नाना विधि के कष्ट सहा।।

आप प्यार से कहते हैं, ''आपने कर्मों का नाश करना है तो सतगुरु की भक्ति करें। **आपको इंसान के जामे का मौका मिला है अगर इसे खो दिया इसमें बैठकर भक्ति नहीं की तो यह हमारी भूल है परमात्मा हमारी इस गलती को माफ नहीं करेगा।''**

परमात्मा की भक्ति अमोलक धन है, उत्तम पदार्थ है यह काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की नाश्क है। परमात्मा की भक्ति सच्चा सुख और सच्ची इज्जत की दाता है लेकिन इस भक्ति के धन को हम अपने आप प्राप्त नहीं कर सकते; जब तक हम मालिक के प्यारे भक्तों के पास जाकर भक्ति का तरीका नहीं सीख लेते। मालिक के प्यारे परमात्मा से बड़े तो नहीं होते लेकिन परमात्मा और उनके बीच कोई भिन्न-भेद नहीं होता।

गफलत छोड़ भुलाओ जग को। नाम अमल अब घोट पिया।।
मन से डरो करो गुरु सेवा। राधास्वामी भेद दिया।।

स्वामी जी महाराज ने इन थोड़ी सी लाईनों में हमें बड़े प्यार से बताया कि संसार इंसानी जामे से फायदा उठाने की बजाए इसे कौड़ियो के भाव गँवा रहा है। हमारे और परमात्मा के दरम्यान अगर कोई रूकावट है तो वह हमारा मन है। दुनिया में कोई हमारा दुश्मन नहीं हमारा दुश्मन मन हमारे अंदर ही बैठा है। मन का कहना मानकर हम कत्ल करते हैं, भाई-भाई का सिर गाजर-मूली की तरह काट रहा है।

प्यारेयो! मन का कहना न मानें। हम सब एक ही पिता के बच्चे हैं सबके साथ प्यार करें, अमन के साथ रहें। परमात्मा की भक्ति करके परमात्मा को पा लें।

14 जून 1995

***

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारबिन्द से

मरने से पहले मरें

जिस व्यक्ति ने अपने आपको मन और इन्द्रियों के घाट से मुक्त कर लिया है, परमात्मा को पा लिया है उसे साधारण व्यक्ति की बजाय इस संसार का रंग अलग दिखाई देता है; उसका संसार को देखने का दृष्टिकोण अलग होता है। झूठी पहचान ने इंसान को इतना दबा रखा है कि आत्मा उसमें अंतर नहीं कर पाती कि क्या मैं शरीर हूँ या शरीर को चलाने वाला हूँ, मैं मकान हूँ या मकान में रहने वाला हूँ?

आँखें इस संसार को स्थूल इन्द्रियों से देखती है। जब तक रूहानी आँखें नहीं खुलती हम सच्ची प्रकृति को नहीं देख सकते। बाहर का ज्ञान इन स्थूल इन्द्रियों से प्राप्त किया जाता है लेकिन मनुष्य इनसे ऊपर उठने का तरीका नहीं जानता। बाहर के द्वार खुले होते हैं अंतर के द्वार बन्द रहते हैं इसलिए हम इस स्थूल पदार्थ की बनी देह से मुक्त नहीं हो सकते। सूक्ष्म रूप और सूक्ष्म इन्द्रियाँ अंतर में रहती हैं लेकिन ये स्थूल शरीर के खोल को हटा नहीं सकती और उच्च रूप का अनुभव नहीं कर सकती। क्या इस संकट पूर्ण अवस्था का कुछ किया जा सकता है?

मौलाना रूम कहते हैं, ''हमें बाहर की दुकान को बन्द करके अंदर की दुकान को खोलना सीखना चाहिए। जिन्होंने ऐसा कर लिया उन्होंने सूक्ष्म आँख खोल ली इसलिए वह प्रत्येक वस्तु के लिए सही दृष्टिकोण रखता है।'' कबीर साहब कहते हैं, ''जिस तरफ भी देखते हैं सारा संसार अँधे लोगों से भरा पड़ा है। जो केवल बाहरी आँखें रखते हैं और जिनकी आँखों में रोशनी नहीं है, वे भी अँधे हैं क्योंकि उनकी अन्तर की सूक्ष्म आँखें नहीं खुली।''

हम सामान्य आँखों से वायुमण्डल में कुछ नहीं देख सकते इसका मतलब यह नहीं कि वायुमण्डल में कुछ नहीं है? सारा वायुमण्डल सूक्ष्म जीवाणुओं से भरा पड़ा है जिसे हमारी चमड़े की आँखें नहीं देख सकती। ये चीजें हम तभी देख सकते हैं अगर हमारी आँखें उन जीवाणुओं जितनी सूक्ष्म हो जाएँ या उन्हें इतना बड़ा बना दिया जाए जिन्हें हम साधारण दृष्टि से देख सकें। ऐसे अँधे लोगों का वर्णन करते हुए गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

अँधे एहि न आखिअनि, जिनि मुख लोइण नाहिं।
अँधे से ही नानका खसमहु घुथे जाहिं।।

वेद–शास्त्र बताते हैं कि परमात्मा अविनाशी है। वह हर एक के अंदर समाया हुआ है और सबके अंदर धुनकारें दे रहा है। परमात्मा बहुत सूक्ष्म है और मन–इन्द्रियों के घाट से परे है। हम इन आँखों से परमात्मा को नहीं देख सकते। गुरु नानक साहब कहते हैं, ''परमात्मा को देखना है तो आप परमात्मा जितने ऊँचे बन जाएं। अगर हमारे अंदर परमात्मा को देखने की इच्छा है तो हमें परमात्मा जितना सूक्ष्म और विचार रहित हो जाना चाहिए।''

कबीर साहब इस संसार की हालत देखकर कहते हैं कि यहाँ सभी अँधे हैं अगर थोड़े से लोग अंधे होते तो उन्हें समझा लेता लेकिन पढ़े लिखे–अनपढ़, गरीब–अमीर, मालिक–नौकर सब एक समान हैं जो देख नहीं सकते; अन्धे हैं। अन्धे को अंधा कैसे आगे ले जा सकता है? निश्चय ही दोनों गड्ढे में गिरेंगे।

एक फकीर किसी गाँव में गए, उनके ह्रदय में बहुत दया थी। उन्होंने लोगों को चेतावनी दी, ''कल एक हवा चलने वाली है जिसे वह हवा छू जाएगी वह पागल हो जाएगा।'' कुछ लोगों ने फकीर की बात

पर विश्वास किया जब हवा चली तो वे अपने घरों में छिप गए और उन्होंने अपने घर के दरवाजे और खिड़कियां बन्द कर लिए। जिन लोगों ने फकीर की चेतावनी को नहीं माना वे हवा के सम्पर्क में आए और पागल हो गए। भाग्यशाली लोग जब घरों से बाहर आए तो उनको छोड़कर सभी लोग पागल हो गए। पागल लोगों की संख्या ज्यादा थी, इसलिए उन्होंने कहा, ''वे पागल हैं।''

इस संसार की हालत इसी तरह की है। पूर्ण पुरुषों ने अपनी आत्मा को मन–इन्द्रियों के घाट से मुक्त कर लिया है। उन्होंने अपने आपको इस स्थूल वातावरण से ऊपर उठा लिया है। उन्होंने अपनी अंतर की दृष्टि को शुद्ध और शाँत कर लिया है वे कण–कण में परमात्मा को देखते हैं। ऐसे बहुत विरले हैं जो सच्चाई को समझते हैं।

इस फँसी हुई मानवता के सभी कार्य पेट से जुड़े हुए हैं। प्रत्येक व्यक्ति स्थूल रूप का विचार करता है। जीवन के सभी सम्बंध इसी से जुड़े हुए हैं। उनके लिए यही सब कुछ है चाहे कोई व्यक्ति मजदूर है या व्यापारी है उसका लक्ष्य पैसा कमाना ही है। बहुत से लोगों ने रूहानी कार्य करने का धंधा अपनाया है उन्होंने प्राणियों को पूर्ण बनाने का उत्तरदायित्व लिया है, शब्द की शिक्षा देनी थी लेकिन उन्होंने भी अपने आपको संसार में गुम कर लिया।

अगर जागृति आखिरी अवस्था में आती है तो उसका क्या फायदा? जब चिड़िया खेत चुग गई तो फिर पछताने से क्या फायदा? यह एक दर्दनाक तथ्य है कि जब सन्त लोग आत्माओं का मार्गदर्शन करने के लिए संसार में आते हैं तब विद्वान और धनवान लोग उन्हें नास्तिक व लोगों को पथभ्रष्ट करने का आरोप लगाते हैं।

गुरु नानकदेव जी जब कसूर शहर में प्रवेश करने लगे तो उन पर पाबन्दी लगा दी कि यह लोगों के दिमाग खराब करता है। धर्म के

नाम पर बड़े–बड़े मठ बन गए, बहुत भ्रष्टाचार है। आध्यात्मिकता का कार्य करने वाले लोग सांसारिक लोगों से भी अधिक सांसारिक हैं। उनका यही कहना है, ''खाओ, पियो और मौज करो।'' वे जीवन के सच्चे तथ्यों को कैसे समझेंगे?

जिस तरह बुलबुले में भरी हुई हवा कितनी देर रुक सकती है? थोड़ी–सी हवा इस बुलबुले को खत्म कर देती है। इसी तरह मनुष्य जीवन की अवस्था है। यह शरीर जिसमें आत्मा सवार है थोड़ी–सी हवा से पानी का बुलबुला समाप्त हो जाता है कोई निशान नहीं बचता। ठीक उसी तरह से जब तक शरीर में सांस और आत्मा रहती है तब तक ही मनुष्य शरीर में रहता है। जब इस शरीर से आत्मा निकल जाती है तो शरीर जीवनविहीन होकर गिर जाता है। ऐसा रोजाना हमारी आँखों के सामने घट रहा है कि एक दिन सबने संसार छोड़ना है फिर भी संसार इस भ्रम में पड़ा हुआ है। हम भी पानी के बुलबुले की तरह थोड़े समय के लिए इस संसार में आए हैं। अन्तिम परिवर्तन जिसे मृत्यु कहते हैं अपनी बारी आने पर हमें पकड़ लेगी।

बहुत बड़े–बड़े व्यक्ति इस संसार में आए उन्हें भी समय पर अपने शरीर को छोड़ना पड़ा है इसलिए इस घटना का एकमात्र हल यह है कि हम अपनी मर्जी से इस शरीर को छोड़ें और ऊपरी मंडलों में चढ़ाई करें। हम ऐसा करेंगे तो इसके दो फायदे होंगे। पहला–हम शरीर को छोड़ना जान जाएँगे जब रोज–रोज यह कार्य करेंगे तो मृत्यु के समय हमें कोई तकलीफ और भय नहीं होगा। दूसरा–ऊपरी मंडलों में चढ़ाई करके और अपनी इच्छा से नीचे उतरकर अन्जान मंजिल पर जाने का भय दूर हो जाएगा; हम सच्चे जीवन के बारे में पूर्ण विश्वास कर लेंगे और इसका रहस्य प्रकट हो जाएगा। जीवन की सच्चाई जानने के लिए मृत्यु का इन्तज़ार करने का कोई लाभ नहीं है।

क्राईस्ट ने कहा हैं, ''जिस दिन हमारे गिनती के साँस खत्म हो जाएँगे यह शरीर पानी के बुलबुले की तरह खत्म हो जाएगा, वह समय कभी भी आ सकता है। हमें तुरंत ही इस शरीर को त्यागने का विज्ञान सीखना चाहिए ताकि मृत्यु का डर मिट सके।'' सारा संसार तेज बहती हुई नदी के समान है जिस पर हमारी आत्मा असहाय होकर बह रही है इसे डूबने से बचाने के लिए जंजीर मिलनी चाहिए नहीं तो यह नीचे चली जाएगी। यह मन एक महासागर है जिसमें बहुत बड़ी–बड़ी लहरें लगातार उठती रहती हैं। इस मन की अविरल तरंगों को काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ऊँचा उठा रहे हैं। मन इसके बीच में गोते खाता है, इससे बचने का अवसर कहाँ है?''

पूर्ण सन्त–सतगुरु के बिना कोई मन के महासागर से पार नहीं हो सकता। जिसने अपने मन को काबू करके इस विनाश से अपने आपको बचा लिया है उसकी संगत से दूसरे भी बच सकते हैं। हम जो तलाश करते हैं वह हमारे अंतर में हमारी आत्मा है लेकिन हम हाथ में रोशनी लेकर इधर–उधर तलाश करते हैं। जो वस्तु हमारे घर में है वह कभी भी हमें नजदीक मालूम नहीं पड़ती, हम अन्धे आदमी की तरह उस वस्तु को बाहर ढूँढ़ते फिरते हैं। हम उस वस्तु को कभी धार्मिक पुस्तकों में, कभी बाहरी पूजा–पाठों में, कभी नदी के किनारों पर, कभी पहाड़ों की चोटियों पर ढूँढ़ते हैं। हम सच्चाई से अनजान रहते हैं। हमारे मन को इन्द्रियों रूपी घोड़े आनन्द के मैदानों में घसीटकर ले जाते हैं। मनुष्य के पास देखने का समय नहीं कि परमात्मा हमारे अंदर छिपा हुआ है और हमारे जीवन से भी अति निकट है।

मैं एक बार कानपुर में एक व्यक्ति से मिला उसने मुझे बताया, ''मैं सच्चाई की तलाश में पैदल चलकर गंगोत्री से पवित्र पानी लेकर कन्याकुमारी गया और फिर कन्याकुमारी का पवित्र पानी गंगोत्री लेकर

गया जो सैंकड़ों मील दूर है लेकिन मुझे जिस चीज की तलाश थी वह चीज मुझे प्राप्त नहीं हुई। सच्चाई कैसे जानी जा सकती है?''

वस्तु कहीं ढूँढ़ै कहीं, केहि विधि आंवै हाथ।
कहै कबीर तब पाइये, जब भेदी लीजे साथ।।

हमारी अंर्तदृष्टि ढ़की हुई है। हमें एक योग्य डॉक्टर या सतगुरु की आवश्यकता है जो उस पर्दे को ऑपरेशन द्वारा हटा दे। सारे सन्त यह कहते हैं कि परमात्मा सबके अंदर है।

है घट में सूझत नाहीं, लानत ऐसी जिन्द।
तुलसी या संसार को, भया मोतिया बिन्द।।

जब स्वामी रामतीर्थ लाहौर में रह रहे थे तब एक शाम वह अपने घर से बाहर आए तो उन्होंने एक औरत को हाथ में लैम्प लिए हुए धरती पर कोई चीज ढूँढ़ते हुए देखा। आपने उस औरत से पूछा, ''माता! तुम क्या तलाश रही हो? '' उस औरत ने उत्तर दिया, ''बेटे! मेरी सुई गुम हो गई है मैं उसे ढूँढ़ने की कोशिश कर रही हूँ।'' आप तुरंत ही उसकी सहायता करने लगे। जब खोज व्यर्थ हो गई तो आपने कहा, ''माता! आपकी सुई कहाँ गिरी थी?'' उसने कहा, ''अरे! मेरी सुई उस कमरे में गिर गई थी।'' स्वाभाविक रूप से आपने कहा, ''आप यहाँ सुई मिलने की आशा कैसे कर सकती हैं जबकि सुई तो आपके घर में गुम हुई है।'' आप इस कहानी पर हँस सकते हैं लेकिन यह सत्य है कि हम क्या कर रहे हैं?

परमात्मा आत्मा की रक्षा करता है और आत्मा शरीर में रहती है। यह दिव्य बन्धन हर एक में है हम इसी से जीवित है, हम इसे इन्द्रियों व बाहरी चीजों में ढूँढ़ते हैं। तृष्णा की आग इस संसार को खाए जा रही है। प्रत्येक घर, जाति, शहर और देश की बलि दी जा रही है। छूत का यह रोग एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक फैल रहा है

क्योंकि व्यक्ति जैसी संगत में रहता है वह वैसा ही बन जाता है। अगर आप सांसारिक लोगों की संगत में रहते हैं तो आपके ऊपर उनका रंग और प्रभाव होगा, आप उसी रास्ते पर चल पड़ेंगे।

कबीर साहब कहते हैं, ''यह आग सारे संसार को जला रही है जिनकी अंदर की आँख खुली है वही इसे देख सकते हैं। अगर कोई व्यक्ति चुपचाप शाँति से बैठ जाए और अपने अंदर देखे तब उसे एहसास होगा कि कोई चीज उसे जला रही है। तृष्णा की छिपी आग प्राणी को भीतर से खाए जा रही है। केवल गुरु के ज्ञान से ही इससे बचा जा सकता है।''

गुरुबाणी में लिखा है, ''आग घास के तिनके को जला देती है लेकिन कोई तिनका आग से बच जाता है।'' मौलाना रूम कहते हैं कि हृदय को उसकी संगत में होना चाहिए, जो हृदय की हालत जानता है। हमें उस पेड़ के नीचे बैठना चाहिए जो खुशबूदार फूलों से लदा हुआ हो। जो व्यक्ति कई घंटे जलते हुए सूरज के नीचे रहा हो जब वह छायादार पेड़ के नीचे बैठेगा तो पेड़ की ठंडक से अपने आपको स्वस्थ कर लेगा। गुरु के सामने हमारा मन निर्मल व शांत होता है अगर हम अपने आपको बचाना चाहते हैं तो यही एक रास्ता है। सतगुरु केवल शीतलता ही नहीं देते ज्ञान भी देते हैं वह ज्ञान सांसारिक नहीं होता।

ज्ञान ध्यान धुन जानिए, अकथ कहावै सोय।

सच्चा ज्ञान और ध्यान 'शब्द' है। शब्द जीवन का संगीत है यह प्रत्येक रोम में समाया हुआ है और सारी सृष्टि का पालन–पोषण कर रहा है। इसका सच्चा ज्ञान हम गुरु की दया से ही प्राप्त कर सकते हैं। यह पहले से हमारे अंदर मौजूद है लेकिन हमें इसका ज्ञान नहीं है। हम माया के भ्रम में भूल रहे हैं और अमूल्य खजाने को प्राप्त नहीं कर

रहे। जो गुरु के सम्पर्क में आकर अंदर नहीं जुड़ते वे इस आग में जलकर मर जाते हैं।

बाहरी अभ्यास आपकी रक्षा नहीं कर सकता। माया की अग्नि इन्द्रियों द्वारा हमला करती है जब हम एक बार इनसे ऊपर उठना सीख जाए और अंतर की शांति में समा जाए फिर बाहरी ऊष्मा सच्चाई के अमृत में अपना प्रभाव खो देगी। यह इस तरह होगा जिस तरह हम वातानुकूलित कमरे में बैठ जाएँ फिर चाहे आप कहीं भी जाएं अगर आपका ध्यान केन्द्रित है तो आपके ऊपर ऊष्मा का असर नहीं होगा। सांसारिक जीवन में दुर्भाग्य हमारे ऊपर महामारी लाता है क्योंकि हमें कुदरती विज्ञान का ज्ञान नहीं है।

जब गुरु नानकदेव जी सांसारिक जीवन से सन्यास लेने की सोच रहे थे तब आपकी सास आपके दो बेटों को लेकर आई और उसने गुरु नानकदेव जी से कहा, ''अगर आपका यही इरादा था तो आप इन बेटों को संसार में क्यों लाए?'' गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''माता! मैं संसार को जेलखाने से मुक्त करने के लिए आया हूँ और आप मुझे इसमें बांधने की कोशिश कर रही हैं। मैं उस आग को बुझाने के लिए आया हूँ जो इस संसार को जलाकर राख कर रही है।''

गुरु नानकदेव जी ने फिर प्रार्थना की, ''हे परमात्मा! आपकी दया ही इस संसार को भस्म होने से बचाएगी, यह आग आप ही बुझा सकते हैं। इन्द्रियों के स्वाद दुःख ही दे सकते हैं। मैंने इस देह में किसी को सुखी नहीं देखा जिसे भी देखा वह दुखी है।''

सब गुरुओं ने मानवता को समझाने का प्रयास किया है कि इस शरीर और इन्द्रियों से ऊपर उठकर व्यक्ति को बेहतर जीवन की अनुभूति होगी। संसार की तुलना में सूक्ष्म व कारण मंडलों में बहुत

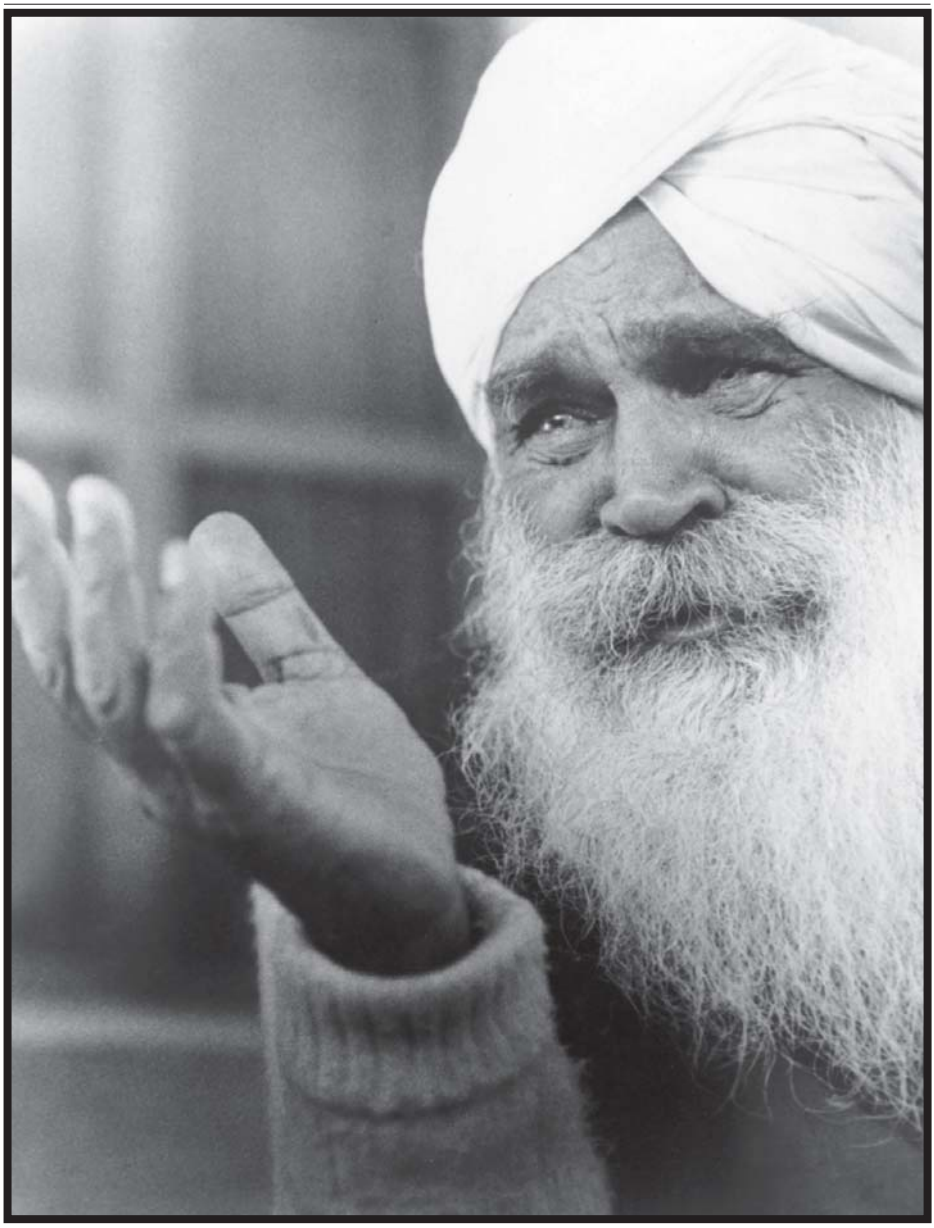

ज्यादा सुख है जबकि वे मंडल भी दुःखों से मुक्त नहीं हैं। व्यक्ति को पूर्ण सुख स्थूल, सूक्ष्म व कारण मंडलों से ऊपर जाने पर मिलता है।

आत्माओं को जागृत करने के लिए सतगुरु अपने ऊपर बोझ लेते हैं। वे पाप से नफरत करते हैं लेकिन पापियों के लिए उनके हृदय में सच्चा प्यार होता है। हर एक के सुधरने की आशा है चाहे वह पापी है या पुण्यात्मा है लेकिन यह तभी हो सकता है जब हम सतगुरु की आज्ञा का पालन करें और बाकी काम सतगुरु पर छोड़ दें।

जो प्यार करना नहीं जानते वे कभी परमात्मा को नहीं पा सकते क्योंकि परमात्मा प्यार है। हमारी आत्मा परमात्मा की अंश है यह भी प्यार है। अगर बाहरी पर्दों को हटा दिया जाए तो उनके नीचे दबा हुआ प्यार जाग जाएगा और वह खिल उठेगा। व्यक्ति प्रेम करने लायक हो जाएगा और वह उस उच्च सत्ता को पा सकेगा जो परमात्मा है।

हमें यह जान लेना चाहिए कि अन्त में हमने प्रत्येक चीज को छोड़ना है अगर हमें सच्चाई का ज्ञान हो जाए तो हमारे जीवन का दृष्टिकोण ही बदल जाएगा अगर यह अवसर हाथ से निकल गया तो फिर हाथ नहीं आएगा, हमने इस जीवन को खो दिया तो दूसरा मनुष्य जन्म मिलने की क्या गारंटी है? हम इस देह से ऊपर उठने और मन व इन्द्रियों से मुक्त होने पर ही जान सकते हैं कि सांसारिक वस्तुओं के भोगों में जीवन बर्बाद करने का क्या परिणाम होगा? हमें इस संसार में किसी न किसी रूप में आना पड़ेगा। इस शरीर को छोड़ने में भयभीत होने की जरूरत नहीं अगर हम अपने जीवन की दशा को ठीक करने में अक्ल से काम लें तो इसके बाद भी आगे जीवन है।

एक राज्य की कहानी है कि वहाँ हर पाँच साल बाद एक नया राजा चुना जाता था। उन पाँच सालों के दौरान राजा सर्वोच्च शासक होता था और उसके हर एक शब्द की पालना होती थी। इस अवधि के बाद वहाँ की प्रजा अपने राजा को घने जंगल में छोड़ आती थी; घने जंगल में जंगली जानवर एवं सर्प आदि होते थे। जिस दिन वह राजा

चुना जाता था, वह अच्छे सौभाग्य का आनन्द उठाता था लेकिन पाँच साल बीतने पर उसे जंगल में ले जाया जाता था और वह राजा अपने जीवन पर दु:खी होकर पछतावा करता था।

कई राजा आए और अपनी बारी आने पर चले गए। एक बार एक गम्भीर विचार वाले व्यक्ति को राजा चुना गया। उसने सोचा कि पांच साल बीतने पर मेरे साथ क्या होगा? वह व्यक्ति विवेकपूर्ण बुद्धि रखता था और अपने भावी जीवन के बारे में चिन्तित था। उसने सावधानीपूर्वक विचार करके गुप्त रूप से मजदूरों को जंगल काटने के लिए भेजा और एक बड़ा स्थान साफ करवाकर उसमें बाग–बगीचे लगवाए और सुंदर ईमारत बनवाई। वह सारा स्थान आरामदायक राज्य बन गया।

जब समय आया उसे राज्य छोड़ने के लिए कहा गया। वह खुशी से मुस्कुराया और उसने कहा, ''हाँ, आओ चलें!'' प्रजा का चकित होना स्वाभाविक था और उन्होंने पूछा कि वह खुशी क्यों मना रहा है? राजा ने कहा, ''मैंने पहले ही अपनी मंजिल तैयार कर ली है इसलिए मुझे यहाँ से जाने का कोई डर नहीं। अब मैं यहाँ से ज्यादा आराम और आनन्द उठाऊँगा क्योंकि यहाँ मेरे ऊपर जिम्मेवारियाँ थी वहाँ मेरे ऊपर कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।''

सारी आत्माओं को मानव जीवन में यह सुनहरा अवसर मिला है हमें इससे फायदा उठाना चाहिए। हम जो तैयारी कर सकते हैं हमें करनी चाहिए। वह दिन आएगा जब हमने इस संसार को छोड़ जाना है। कोई भी व्यक्ति यहाँ सदा रहने के लिए नहीं आया और न ही कोई सदा यहाँ रहेगा। अगर हम देह को त्यागकर ऊपर जाना सीख लें जोकि मौत के बाद का जीवन कहलाता है तब वह अनुभव हमें भावी घर से परिचित करवा देगा। वहाँ सुख और शांति है फिर हमें मौत का डर नहीं होगा।

सारा संसार मृत्यु से डरता है और सदा ही धरती पर रहना चाहता है। विरले ही सच्चे जीवन की तलाश करते हैं जो गुरु की दया से जीवित ही मर जाते हैं वही परमात्मा की इच्छा को समझ सकते हैं।

एक जागृत व्यक्ति से मिलकर हम उसकी दया से जीवित ही मरना सीख सकते हैं। उस दिव्य शक्ति के साथ जुड़कर जब जागृत पुरुष बन जाता है तब वह देखता है कि वही कर्ता है मैं नहीं। गुरु की आज्ञा के भेद खुलते चले जाते हैं।

गुरु नानक साहब कहते हैं कि जो जीवित मर जाता है उसे अटल मुकाम की प्राप्ति होती है। इस बारे में स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''आपको यह सुनहरा अवसर मिला है। आपका काम केवल खाना, पीना और शरीर की देखभाल करना नहीं है, एक दूसरा कार्य भी है जिसके लिए हम सोचते ही नहीं।

वास्तव में हम उस कबूतर की तरह हैं जो बिल्ली को देखकर आँखें बन्द कर लेता है बिल्ली वहीं होती है कबूतर को तभी पता चलता है जब बिल्ली उसका गला पकड़ लेती है। हम शरीर नहीं हैं हम शरीर को चलाने वाले हैं। हम इस समय संसार को देह के स्तर से देखते हैं। यह संसार बदल रहा है और इसी तरह से हमारे शरीर बदल रहे हैं।

वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि हमारी हड्डियाँ भी सात वर्षों के बाद बदल जाती हैं, यह प्रकृति के नियम के अनुसार होता है। दो चीजें समान दर से बदल रही हैं लेकिन परिवर्तन की गति दिखाई नहीं देती। एक तैरती हुई नाव नदी के बहाव के समान ही चलती है। नाव पर सवार लोग इसकी हलचल नहीं देख पाते लेकिन किनारे पर खड़ा व्यक्ति इसे स्पष्ट रूप से देखता है और चेतावनी देता है, ''भाईयो! तुम तेजी से बहे जा रहे हो।'' लेकिन हम भ्रमवश उस पर विश्वास नहीं करते। भ्रम से निकलकर हम आत्मा के स्तर से स्पष्ट रूप से देखते

हैं कि शरीर बदल रहा है इसी तरह से संसार परिवर्तनशील है। इस शुद्ध अवधारणा से संसार, शरीर और इससे सम्बंधित प्रत्येक चीज हमारी लगती हैं लेकिन सच्ची अनुभूति ऊपर है।

जीवन के उतार–चढ़ाव से दु:खों के प्रभाव शक्तिहीन हो जाते हैं, मृत्यु का भय नष्ट हो जाता है और बाहरी स्वाद फीके पड़ जाते हैं। जब हम उच्च सत्ता के सम्पर्क से अमृतपान कर लेते हैं तब प्रत्येक वस्तु अपने सच्चे प्रकाश में दिखाई देती है। हम जो करेंगे उसका परिणाम सफलता ही होगा क्योंकि हम जो भी इच्छा करेंगे हमारा ध्यान उसे नियन्त्रित करेगा।

सारे सतगुरुओं ने बताया है, ''हे भाइयो! आप मानव प्राणी हैं पशु नहीं हैं।'' मौलाना रूम ने कहा, ''हमें पशुओं की तरह व्यवहार नहीं करना चाहिए। पशु खा–पीकर अपना जीवन बिताते हैं यह विचित्र बात नहीं है। परमात्मा ने मानव को सारे प्राणियों का सरदार बनाया है इसलिए हमें सदा ऊपर की ओर देखना चाहिए। मनुष्य को उसकी धरोहर की रक्षा करनी चाहिए। नर नरायणी देह को देवी–देवता भी प्रणाम करते हैं क्योंकि इस नर देही में परमात्मा को पाया जा सकता है। इस जीवन में यह कार्य करके आप अपने जीवन को सफल बनाएं।''

एक बूँद सीप में पड़ने से मोती बन जाता है अगर उसका खोल टूट जाए तो कोई फर्क नहीं पड़ता? अगर मोती बनने से पहले एक बूंद खोल में सूख जाती है तो वह मोती नहीं बनेगा। इस हालत में मृत्यु का भय होगा। कबीर साहब कहते हैं, ''मृत्यु से सारा संसार डरता है लेकिन मुझे मृत्यु बहुत आनन्द देती है क्योंकि इस मृत्यु द्वारा ही पूर्ण शांति प्राप्त होती है। जब देह रूपी पर्दा हट जाता है तब हम परमात्मा के साथ होते हैं।''

जब मौलाना रूम बहुत बीमार हुए, लोग उनके पास आए और उन्होंने प्रार्थना की कि वे जीवित रहें। मौलाना रूम ने आँखें खोलीं और कहा, ''भाइयो! आपको इस प्रार्थना से फायदा हो। क्या आप नहीं जानते कि इस देह रूपी वस्त्र ने मुझे मेरे प्रभु से दूर कर रखा है, यह वस्त्र हट जाए तो मैं सदा के लिए उस प्रभु के साथ एक हो जाऊँ?''

जिन आत्माओं की अंदर की आँखें खुल जाती हैं वे कहते हैं कि हमने इस जीवन में प्रभु को पा लिया है निःसन्देह परमात्मा हमारे साथ है हम उससे अलग नहीं। हम इन्द्रियों के भोगों को भोगते हुए सच्चे रूप को भूल गए हैं। हमें बाहर से ध्यान हटाकर अंदर लगाना चाहिए।

हम बाहर देखते हैं लेकिन हमारी अर्न्तदृष्टि बन्द है। क्या हम अन्धे नहीं? हमारे बाहरी कान खुले हैं लेकिन हम आन्तरिक संगीत की ओर से बहरे हैं। हमारे अंदर नाम का अमृत बह रहा है लेकिन मनुष्य संसार के नशे में चूर है। शम्स तबरेज कहते हैं, ''मैंने हज़ारों लोगों को जन्म के बाद आँखें दी हैं ताकि वे सब जगह परमात्मा को देख सकें। बहुत अन्धे लोगों को नामदान दिया हैं। वे खुशी से बताते हैं कि उन्होंने उगता हुआ सूर्य देखा है। आप अंदर देख सकें इसका मतलब यह नहीं कि आपकी बाहर की आँखें काम करती हैं या नहीं!''

दुर्भाग्य की बात है कि थोड़े से लोग ही इस विज्ञान से परिचित हैं। यह पुरातन से पुरातन ज्ञान है। यह संसार पूर्ण सतगुरु के बिना कभी खाली नहीं रहा। जब सतगुरु आते हैं वे इस पुरातन सच्चाई का नवीनीकरण कर देते हैं लेकिन जब वे संसार से चले जाते हैं तो मनुष्य फिर भूल जाता है। मांग और पूर्ति का नियम सदा कार्य करता है। भूखे को रोटी और प्यासे को पानी प्राप्त होता है। जब शिष्य तैयार होता है तो गुरु तुरंत प्रकट हो जाता है।

***

परम सन्त सावन सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

सतसंग की महानता

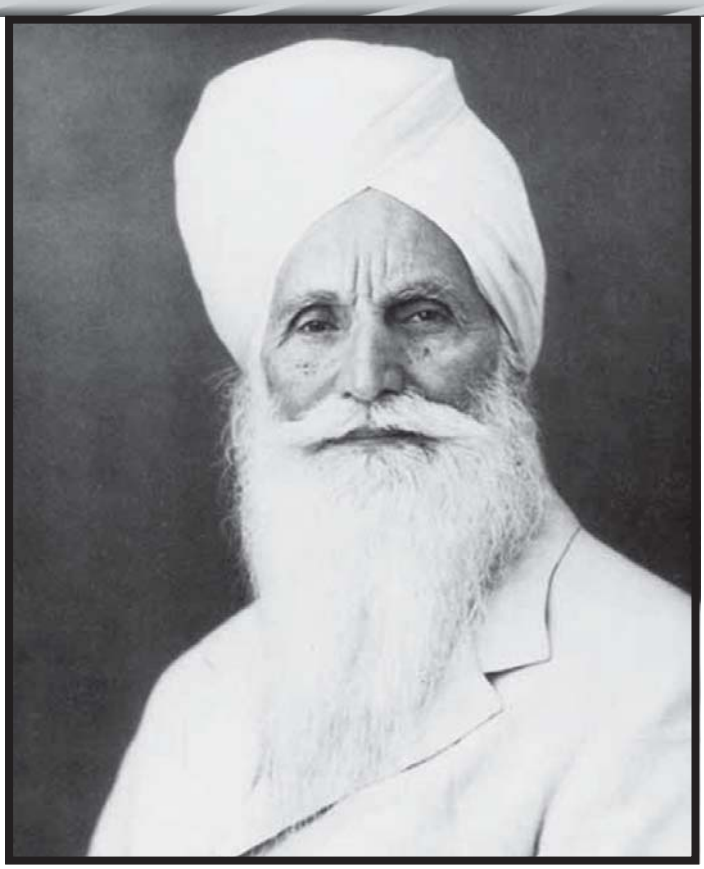

सन्तों का सतसंग सुनकर मुक्ति का द्वार मिलता है। वेदों में लिखा है कि किसी भी व्यक्ति को सतसंग के बिना सुख और चैन नहीं मिलता। सतसंग बहुत बड़ी दौलत है लेकिन हम सतसंग की कद्र नहीं करते। अगर कोई सतसंग का एक शब्द भी अपने अंदर जज्ब कर लेता है तो उसके जीवन में परिवर्तन आ जाता है। पूरे सतसंग की तो क्या बात करें?

एक चोर था, उसने मरते समय अपने इकलौते बेटे को बुलाकर उपदेश के रूप में दो बातें बताई। पहली बात कि किसी मंदिर में जाकर सतसंग या उपदेश नहीं सुनना और दूसरी बात अगर तुम चोरी करते हुए पकड़े जाओ तो गुनाह कबूल मत करना भले ही तुम्हें फाँसी पर क्यों न चढ़ा दिया जाए।

एक दिन वह नौजवान लड़का किसी घर से चोरी करके लौट रहा था उसने एक पुलिस वाले को आते हुए देखा। पास में पगडंडी थी वह अपनी जान बचाने के लिए भागा। वहाँ उसे एक मंदिर मिला जिसमें उपदेश दिया जा रहा था लेकिन उसे अपने पिता की सीख याद आई तो उसने अपने कानों में उंगलियां डाल ली कि उसे कोई भी शब्द सुनाई न दे जाए लेकिन कान बंद करने से पहले उसने एक वाक्य सुना कि किसी देवी-देवता की परछाई नहीं होती।

किसी और दिन वह नौजवान चोरी के इल्जाम में पकड़ा गया। उसे राजा के सामने पेश किया गया। राजा ने उससे पूछा, ''क्या तुमने चोरी की है?'' उसने कहा, ''मैंने चोरी नहीं की।'' उस नौजवान को मारा-पीटा गया लेकिन फिर भी उसने गुनाह कुबूल नहीं किया बाद में उसे कैदखाने में डाल दिया गया। राजा के पुलिस दल में एक बड़ी चालाक महिला थी। उस महिला ने राजा से कहा कि मैं इससे गुनाह कुबूल करवाऊंगी। राजा ने उसकी योजना को मंजूरी दे दी और उसे यह काम सौंप दिया गया।

उस महिला ने रात को देवी माँ दुर्गा का रूप धारण किया। दो नकली हाथ लगाए, हाथ में दो जलती मशाले पकड़ी और एक नकली शेर बनाकर उसके ऊपर बैठने का ढोंग रचाकर बहुत हो-हल्ला मचाते हुए चलने लगी। कैदखाने के दरवाजे एकदम से खुल गए और अंधेरे में मशाल की रोशनी से कैदखाना चमक उठा।

उस बेचारे नौजवान ने देखा कि साक्षात देवी माँ दुर्गा उसके सामने खड़ी है, वह आश्चर्यचकित हो गया और उसके पाँव में गिर गया। ढोंगी माता ने नौजवान को आर्शिवाद देते हुए कहा, ''ध्यान देकर सुन ! मैं दुर्गा माँ हूँ। मैं तुम्हारी दुर्भाग्यमय स्थिति को खत्म करने आई हूँ। तुमने चोरी की है तो मुझे सच बताओ अगर मुझसे सच कहोगे तो मैं तुम्हारी रिहाई करवाने में मदद करूंगी।''

वह चोर अपना गुनाह कुबूल करने ही वाला था जब उसने उस ढ़ोंगी देवी माँ दुर्गा की परछाई देखी तो उसे मंदिर में मिले उपदेश का वाक्य याद आया कि देवी-देवताओं की परछाई नहीं होती। वह तुरंत समझ गया कि यह सब ढ़ोंग और दिखावा है। उस चोर ने कहा, ''माते! मैंने कोई गुनाह नहीं किया लेकिन राजा मुझे बेकार में सजा दे रहा है।''

अगले दिन उस चालाक औरत ने राजा से कहा, ''यह नौजवान अपराधी नहीं हैं।'' राजा ने उस नौजवान की रिहाई का हुक्म जारी कर दिया।

चोर बहुत खुश हुआ। उसने सोचा! यह कितना अच्छा हुआ कि सतसंग के सिर्फ एक वाक्य को सुनकर मेरी कैदखाने से रिहाई हो गई अगर मैं पूरा सतसंग सुनूं तो मेरी जिंदगी ही पलट जाएगी; मेरे जीवन में परिवर्तन हो जाएगा। उसने सतसंग सुनना शुरू किया जिसका नतीजा यह हुआ कि उसने चोरी का धंधा छोड़ दिया और वह महात्मा बन गया।

***

धन्य अजायब

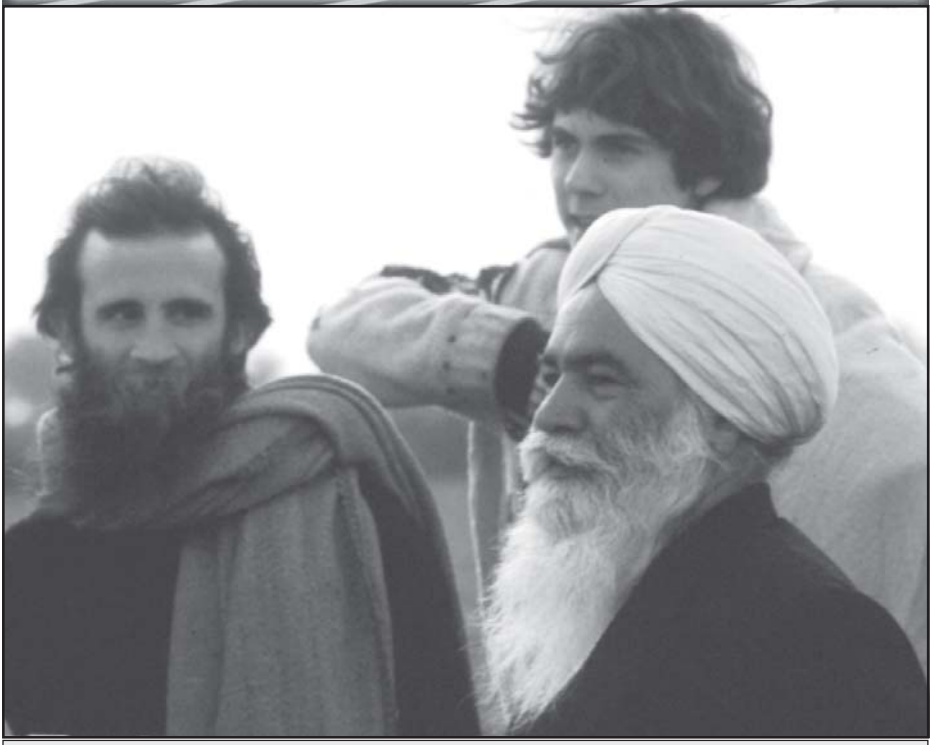

16 पी.एस. रायसिंहनगर (राजस्थान) आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रमः

07 से 11 सितम्बर 2016

28 से 30 अक्टूबर 2016

25 से 27 नवम्बर 2016

23 से 25 दिसम्बर 2016